राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा की भूमिका

विपिन मार्टिन
शोध छात्र, शिक्षा-शास्त्र विभाग, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

सारांश

इस पत्र का उद्देश्य एक राष्ट्र के लोगों में राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करने के लिए शिक्षा की भूमिका पर प्रकाश डालना है। यह इस बात पर चर्चा करने की कोशिश करता है कि किसी देश की शिक्षा प्रणाली अपने देशवासियोंमें राष्ट्रवाद कैसे पैदा कर सकती है। यह पत्र एक ओर राष्ट्रीय एकता के महत्व और आवश्यकता पर प्रकाश डालता है तो दूसरी ओर राष्ट्रीय एकता के मार्ग में आने वाली विभिन्न बाधाओं पर भी चर्चा करता है। पेपर उन उपायों का सुझाव देता है जिन्हें शिक्षकों, शैक्षिक संस्थानों और नीति निर्माताओं द्वारा एक दूसरे के लिए और अपने राष्ट्र के प्रति छात्रों के बीच अपनेपन की भावना विकसित करने के उद्देश्य से अपनाया जा सकता है। किसी देश में राष्ट्रीय एकता विकसित करने के लिए, उसके लोगों के बीच भावनात्मक एकीकरण महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से भारत जैसे देश में जहाँ लोग कई तरह से विविध हैं। शिक्षा किसी राष्ट्र के लोगों को करीब लाने और एकता की भावना विकसित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। उनमें से यह पत्र संस्थानों में व्यवस्थित रूप से डिज़ाइन किए गए पाठ्यक्रम और केंद्रित प्रथाओं के कार्यान्वयन का सुझाव देता है जो लोगों को भावनात्मक और राष्ट्रीय स्तर पर एकीकृत कर सकते हैं और उनमें राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा कर सकते हैं।

परिचयः

किसी भी राष्ट्र की ताकत उसके लोगों की एकता में निहित है। संयुक्त हम खड़े हैं, विभाजित हम गिर जाते हैं। -एक बहुत पुरानी और प्रसिद्ध कहावत है, जो देश के नागरिकों पर भी लागू होती है। भारत जैसे देश में जहाँ लोग जाति, धर्म, नस्ल, भाषा, संस्कृति और रीति-रिवाजों के मामले में विविध हैं, ऐसे माहौल को बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है जहाँ लोग एक दूसरे को एक इकाई के हिस्से के रूप में देखते हैं, लोगों को भावनात्मक और राष्ट्रीय स्तर पर जोड़ने में शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। छात्र अपने शिक्षकों को रोल मॉडल के रूप में देखते हैं और उनके व्यवहार की नकल करते हैं। इस प्रकार शिक्षकों को सभी छात्रों के साथ निष्पक्षता और गरिमा के साथ बातचीत करनी चाहिए, भले ही संस्कृति, स्थिति, धर्म आदि के संदर्भ में छात्रों की पृष्ठभूमि में अंतर हो, यह छात्रों को भी एक दूसरे का सम्मान करने और स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। संस्थान उन प्रथाओं को अपना सकते हैं जो छात्रों में एकता की भावना पैदा कर सकती हैं। विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए जो छात्रों को संचार और बातचीत के अवसर प्रदान करती हैं, इससे उनके बीच बेहतर भावनात्मक जुड़ाव पैदा होगा जिसे भावनात्मक एकीकरण कहा जा सकता है। राष्ट्रीय स्तर पर, जब किसी देश के लोग एक राष्ट्र के रूप में बंधन और एकता की भावना महसूस करते हैं, तो इसे राष्ट्रीय एकता के रूप में समझा जा सकता है, किसी देश की शिक्षा प्रणाली को पाठ्यक्रम डिजाइन करने पर ध्यान देना चाहिए जहाँ छात्र न केवल ज्ञान और कौशल प्राप्त करते हैं बल्कि अपने देश के मूल्यवान नागरिक भी बनते हैं जो अपने राष्ट्र और साथी नागरिकों पर गर्व करते हैं।

राष्ट्रीय एकीकरणः

राष्ट्रीय एकता का अर्थ है राष्ट्र के सभी लोगों के बीच एकता की भावना जब एक देश के सभी लोग क्षेत्रों, जातियों में अंतर के बावजूद हम की भावना से एक दूसरे से जुड़े हों संस्कृतियों और धर्मों, आदि, और राष्ट्रीय हितों से पहले अपने व्यक्तिगत और सामूहिक हितों का त्याग करते हैं, तो हम कहते हैं कि राष्ट्र (लाल और पालोद) में राष्ट्रीय एकता है। हर राष्ट्र के लंबे समय तक जीवित रहने के लिए राष्ट्रीय एकता बहुत महत्वपूर्ण है। भारत में स्वतंत्रता और एकता की भावना को हिलाने के लिए

घुसपैठियों द्वारा फूट डालो और राज करो की नीति अपनाई गई है, लेकिन नागरिकों के बीच भाईचारे और एकजुटता की भावना ने सभी बाधाओं को दूर करने में मदद की है। भाईचारे की इस भावना और देश के सभी लोगों को एक बड़े परिवार का हिस्सा मानने को राष्ट्रीय एकता कहा जा सकता है। यह महत्वपूर्ण है कि देश के नागरिक एक-दूसरे के साथ भावनात्मक रूप से बंधे हुए महसूस करें, उन्हें एक-दूसरे की समस्याओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए और दर्द भावनात्मक स्तर पर इस तरह के बंधन को भावनात्मक एकता कहा जाता है, जिसे राष्ट्र के बड़े स्तर पर राष्ट्रीय एकता के रूप में समझा जा सकता है।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता

किसी भी राष्ट्र के अस्तित्व और अस्तित्व के लिए राष्ट्रीय एकता अत्यंत आवश्यक है। यदि किसी देश के लोग एक नहीं हैं तो उसका विभाजन और पतन निश्चित है। भारत विविधता वाला देश है। यहाँ लोग विभिन्न धर्मों के हैं, विभिन्न संस्कृतियों का पालन करते हैं, विभिन्न भाषाएँ बोलते हैं, आदि। इस प्रकार एक देश के रूप में सफलतापूर्वक जीवित रहने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एकता और एकता की भावना बहुत महत्वपूर्ण है। किसी भी देश के लिए यह बहुत खतरनाक है कि वहाँ के लोग खुद को विभाजित महसूस करने लगें और केवल अपने समुदाय के स्वार्थ को पूरा करने पर ध्यान दें, अपनी स्थानीय संस्कृति और परंपराओं का सम्मान करना अच्छा है, लेकिन राष्ट्र के लिए सम्मान सर्वोपरि होना चाहिए, लोगों को यह समझाने के लिए कि राष्ट्रीय हित सर्वोच्च होना चाहिए, एकता और राष्ट्रीय एकता बहुत महत्वपूर्ण है। निम्नलिखित कुछ प्रमुख कारण हैं जो राष्ट्रीय एकीकरण की आवश्यकता का संकेत देते हैं।

- देश के विकास के रक्षा और सुरक्षा के लिए।
- देश के नागरिकों के जीवन स्तर में वृद्धि करना।
- वर्ग-संघर्ष को कम करने के लिए।
- विभाजनकारी राजनीति को ध्वस्त करने के लिए आईसीएस और तत्व।
- राष्ट्र और उसकी उपलब्धियों के प्रति सम्मान पैदा करने के लिए।
- लोगों के बीच एकता, भाईचारे और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को प्रोत्साहित करने के लिए।
- प्रांतवाद और क्षेत्रीय संकीर्णता को दूर करने के लिए।

राष्ट्रीय एकता का महत्वः

एक राष्ट्र के नागरिक के रूप में लोगों का गौरव और एकता किसी भी राष्ट्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जब किसी देश के नागरिक एकजुट होते हैं, तो राष्ट्र अपने लोगों की सामूहिक शक्ति के कारण किसी भी चुनौती को पार कर सकता है, भारत जैसे देश में, जो इतनी सारी संस्कृतियों, भाषाओं, क्षेत्रों और नस्लों का मिश्रण है, राष्ट्रीय एकता अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। देश के लोगों को हमेशा अपने मतभेदों को दूर करने और साझा राष्ट्रीय पहचान वाले एक महान राष्ट्र के नागरिकों के रूप में देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे देश और इसके नागरिकों को कई लाभ होंगे। राष्ट्रीय एकीकरण के कुछ प्रमुख लाभ जो इसके महत्व को दर्शाते हैं, इस प्रकार हैं।

- एकजुट नागरिकों वाला मजबूत राष्ट्र।
- नागरिकों में राष्ट्र के प्रति गर्व और सम्मान की उच्च भावना।
- राष्ट्र के नागरिकों की एकता और भावना के बारे में अन्य देशों को कड़ा संदेश।
- जाति, धर्म आदि के नाम पर होने वाले झगड़ों, दंगों और हिंसा को कम करता है।
- मजबूत राष्ट्रीय रक्षा।
- जातिवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, आदि की प्रथाओं में गिरावट।
- विभाजनकारी राजनीति और अलगाववादियों को झटका।
- राष्ट्र का आर्थिक विकास।

राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधाएँः

यद्यपि राष्ट्रीय एकीकरण किसी भी राष्ट्र के सफल अस्तित्व के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, फिर भी हम राष्ट्रीय एकीकरण के रास्ते में आने वाली विभिन्न बाधाओं से इनकार नहीं कर सकते हैं, यह प्रक्रिया विशेष रूप से ज़ोरदार रही है जहाँ लोगों को एकजुट होना है जिसमें विविध, बड़े समूह शामिल हैं जो अपने स्वयं के रीति-रिवाजों, भाषा या अलग पहचान से प्रतिष्ठित हैं (डेविस और कालू न्विवु।, 2001)। ऐसे कई कारक हैं जो लोगों को विभाजित

करते हैं और अलगाववाद की भावनाओं को भड़काते हैं जाति, धर्म, राज्य, भाषा या समुदाय के नाम पर उठने वाले छोटे-मोटे मुद्दे बड़े रूप ले लेते हैं जिससे नागरिकों के बीच टकराव पैदा हो जाता है, जातीय समूहों के बीच पूर्वाग्रह की भावना जातीय समूहों पर आधारित विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संघों के अस्तित्व से और भी बदतर हो गई थी, जिन्होंने अपने स्वयं के जातीय हितों (अज़ीज़, सालेह और एमा रिबू, एच.ई., 2010) का समर्थन किया था। इन मुद्दों को राजनीतिक दलों द्वारा बढ़ावा दिया जाता है। वोट बैंक, कभी-कभी हिंसा और दंगों की ओर ले जाता है। ग्रामीण पृष्ठभूमि के निरक्षर लोगों का जाति, पंथ और धर्म में अंतर के आधार पर ब्रेनवॉश किया जाता है, जिससे लोगों के बीच शांति और एकता भंग होती है। राष्ट्रीय एकता में सबसे आम बाधाएँ या बाधाएँ इस प्रकार हैं:

- विभिन्न जातियों, नस्लों और धर्मों की उपस्थिति।
- संचार बाधाओं के लिए अग्रणी विभिन्न भाषाएँ।
- सत्ता संघर्ष।
- वोट बैंक के लिए विभाजनकारी राजनीति।
- अलगाववादी नेता।
- प्रांतवाद और राज्य की राजनीति।
- निरक्षरता और उपयुक्त शिक्षा प्रणाली का अभाव।
- सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि में अंतर।
- अन्य राष्ट्रों का प्रभाव और हस्तक्षेप।

राष्ट्रीय एकता में शिक्षकों और शैक्षिक संस्थानों की भूमिका

शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र के विकास और उत्थान के लिए सबसे महत्वपूर्ण कुंजी है। बच्चे राष्ट्र का भविष्य हैं, प्रभावी, एकीकृत और उदार शिक्षा के माध्यम से हम छात्रों में एक दूसरे के प्रति स्वीकृति और अपनेपन की भावना पैदा कर सकते हैं, ये छात्र देश के जिम्मेदार नागरिक बनेंगे जिन्हें अपने देश पर गर्व होगा और वे राष्ट्रीय एकता के मूल्य को जानेंगे। शिक्षक राष्ट्र निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। देश, राष्ट्रीय प्रतीकों और सभी पृष्ठभूमि के लोगों के प्रति शिक्षकों का सम्मानपूर्ण आचरण छात्रों द्वारा देखा और सीखा जाता है। शिक्षा के सबसे बड़े फायदों में से एक यह है कि कौशल जिन्हें पहली बार विकसित होने में वर्षों लग सकते हैं। एक बार कुछ लोगों के पास होने के बाद उन्हें आसानी से पारित किया जा सकता है (महमूद ए.एफ., 1980)। इस प्रकार एक शिक्षक जो स्वयं के मूल्यों को दर्शाता है, राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के प्रति सम्मान, छात्रों में ऐसे मूल्यों को विकसित करने के लिए एक उत्प्रेरक हो सकता है। शिक्षक और शैक्षणिक संस्थान देश के छात्रों और युवाओं को भावनात्मक और राष्ट्रीय स्तर पर एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। बहुलतावादी देशों में, सरकारें यह भी उम्मीद करती हैं कि स्कूल धार्मिक, भाषाई, या जातीय अंतरों (पेष्किन.ए., 1967) द्वारा खंडित उप-आबादी को एकीकृत करने में सहायता करेंगे। विघटनकारी जातीयता को रोकने और राष्ट्रवाद की स्थिरता को बनाए रखने के लिए आवश्यक एकीकरण में शिक्षा की एक महत्वपूर्ण और प्राथमिक भूमिका है (डेविस और कालू-न्वीवू, 2001)। कुछ हद तक, सरकार की अंतर-समूह संघर्ष को कम करने और स्कूली बच्चों के बीच एक एकीकृत राष्ट्रीय चेतना पैदा करने की सफलता एक राष्ट्रीय एकीकरणकर्ता के रूप में शिक्षा की भूमिका पर टिकी हुई है (अबौचेडिड एंड नासर, 2000)। स्कूलों और कॉलेजों में, विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए जहाँ छात्रों को एक-दूसरे के साथ लगातार बातचीत करने का अवसर मिल सके। समारोहों या समारोहों के दौरान, उन गीतों, नाटकों या नाटकों को शामिल किया जाना चाहिए जो राष्ट्र और राष्ट्रीय एकता के महत्व को दर्शाते हैं, शिक्षकों को छात्रों को प्रत्येक के मतभेदों का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और सभी को राष्ट्र नामक एक बड़े परिवार के हिस्से के रूप में देखते हैं, अध्याय और सामग्री जो छात्रों को उनके देश, उसके इतिहास, उपलब्धियों आदि के बारे में ज्ञान प्रदान कर सकते हैं, उन्हें पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। सभी पृष्ठभूमियों, धर्मों और क्षेत्रों से राष्ट्रीय नायकों के योगदान के बारे में अध्याय छात्रों को पढ़ाए जाने चाहिए। व्यक्तियों के प्रारंभिक वर्ष अपने शिक्षकों और स्कूलों से अत्यधिक प्रभावित होते हैं। इस प्रकार शिक्षकों के सहयोग से शिक्षण संस्थान छात्रों के बीच देशभक्ति, भाईचारा और एकता पैदा करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, जो हमारे देश का भविष्य हैं जो राष्ट्रीय एकता की ओर ले जाता है।

शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता के लिए सुझाए गए उपाय:

किसी देश के नागरिकों में राष्ट्रीय एकता और एकता की भावना उत्पन्न करने के लिए उसकी शिक्षा प्रणाली अनेक उपाय अपना सकती है, प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा में, छात्रों को राष्ट्र के नाम और प्रतीकों से परिचित कराया जाना चाहिए। प्रत्येक छात्र को राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय पक्षी आदि के बारे में पढ़ाया जाना चाहिए। वार्षिक समारोह और समारोहों के दौरान राष्ट्रीय मुद्दों के बारे में गीत, नृत्य प्रदर्शन और नाटक का प्रदर्शन किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय नायकों और स्वतंत्रता सेनानियों का जन्मदिन मनाया जाना चाहिए और उन्हें देश के लिए उनके योगदान के लिए याद किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का एक संभावित माध्यम इतिहास का पाठ्यक्रम है (अबौचेडिड और नासर, 2000)। राष्ट्रीय इतिहास और राष्ट्रीय उपलब्धियों के बारे में अध्याय पढ़ाए जाने चाहिए। स्कूलों और कॉलेजों को एक समावेशी वातावरण बनाना चाहिए जहाँ सभी धर्मों के त्योहार मनाए जाए। सभी छात्रों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का सम्मान किया जाए। विभिन्न पृष्ठभूमि से संबंधित छात्रों के प्रति उनके व्यवहार में शिक्षकों या शैक्षिक छात्रों द्वारा कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। सभी के साथ समानता, निष्पक्षता और प्रेम के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। शिक्षकों के इन निष्पक्ष और एकीकृत व्यवहारों और शिक्षण संस्थानों की प्रथाओं का बढ़ते बच्चों के मनोविज्ञान पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है और उनमें बचपन से ही भाईचारे, एकता और शांति के मूल्यों का समावेश होता है। कि शिक्षा का आयोजन किया जाना चाहिए और उन शैक्षिक कार्यक्रमों को संरचित किया जाना चाहिए जो राष्ट्रीय जीवन की विविधता में आवश्यक एकता सिखाते हैं और जो बच्चों में सांप्रदायिक सद्भाव और मानवीय साथी-भावना के गुणों को विकसित करने का प्रयास करते हैं (सक्सेना और चतुर्वेदी, 2014)। विश्वविद्यालय में। स्तर की शिक्षा, देश के युवाओं को राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने वाले संगोष्ठी, बहस और सेमिनार आयोजित करने और भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। देश के विभिन्न हिस्सों के बीच राष्ट्रीय पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। ये शैक्षिक गतिविधियाँ युवा छात्रों को एक दूसरे के साथ बातचीत करने और बंधन विकसित करने का अवसर प्रदान करती हैं, यह एक ओर देश में विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और संप्रदायों के प्रति सम्मान और जागरूकता पैदा करता है, और दूसरी ओर यह एक राष्ट्र के नागरिकों के रूप में लोगों के बीच सामूहिक पहचान की भावना विकसित करता है, छात्रों के बीच एकता विकसित करने और राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों और शैक्षिक संस्थानों द्वारा निम्नलिखित कुछ सुझाव शामिल किए जा सकते हैं:

- विद्यार्थियों को राष्ट्र और उसकी उपलब्धियों के बारे में शिक्षित करना।
- विद्यार्थियों को राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय खेल, राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय पक्षी के बारे में जागरूक करना।
- छात्रों में राष्ट्रवाद और एकता को विकसित करने के क्रेन्द्रित दृष्टिकोण के साथ पाठ्यक्रम को नया स्वरूप देना।
- छात्रों को राष्ट्र के इतिहास और समृद्ध संस्कृति से परिचित कराना।
- राष्ट्रीय नायकों का जन्मदिन मनाना और राष्ट्र के लिए उनके योगदान को याद करना।
- छात्रों के बीच समानता, देशभक्ति और एकता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों को उदाहरण पेश करना चाहिए।
- भावनात्मक बंधन में सुधार के लिए छात्रों को लगातार बातचीत के अवसर प्रदान करना।
- अन्य संस्कृतियों के प्रति जागरूकता और स्वीकृति को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक-विनिमय कार्यक्रम, अंतर-राष्ट्रीय खेलकूद बैठक, राष्ट्रीय भ्रमण जैसी गतिविधियों का आयोजन करना।
- संगोष्ठी, वाद-विवाद या सम्मेलन आयोजित करना जो राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देते हैं।
- सुबह की सभा, बार्षिक समारोह, खेलकूद बैठक, माता-पिता-शिक्षक बैठक आदि का भावनात्मक जुड़ाव और राष्ट्रीय एकता में सुधार के अवसर के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष:

हर देश समय के साथ बढ़ना और विकसित होना चाहता है जिसके लिए उसके नागरिकों का सामूहिक प्रयास बहुत महत्वपूर्ण है, किसी देश के लोगों के बीच उनकी आदतों, मतों, रीति-रिवाजों और भाषाओं के संदर्भ में अंतर उनकी विविध सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक पृष्ठभूमि के कारण अपरिहार्य है, लेकिन एक राष्ट्र तभी महान बन सकता है जब उसके लोग एक राष्ट्र के नागरिक के रूप में अपनी सामूहिक पहचान को पहचानें। लोगों को धर्म, जाति और क्षेत्र के नाम पर अपने साथी देशवासियों के बीच दरार पैदा करने वाले छोटे मुद्दों से ऊपर उठना चाहिए। राष्ट्रहित को सर्वोपरि माना जाना चाहिए और इस प्रयास में शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, शिक्षक और शैक्षणिक संस्थान बचपन से ही छात्रों में एकता और राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा कर सकते हैं, सामरिक और एकीकृत शिक्षा आयन प्रणाली को अपनाया जा सकता है जहाँ विभिन्न संप्रदायों और पृष्ठभूमि के छात्र एक-दूसरे को स्वीकार करना और सम्मान करना सीखते हैं। शिक्षकों को रोल मॉडल के रूप में माना जाता है जो छात्रों को अपने देश का सम्मान करने और सभी लोगों के साथ गरिमा और निष्पक्षता के साथ व्यवहार करने के लिए प्रभावित कर सकते हैं। राष्ट्रीयता, भाईचारे और एकता के मूल्यों को विभिन्न शैक्षिक और पाठ्येत्तर गतिविधियों का उपयोग करके प्रारंभिक कक्षाओं से ही विकसित किया जाना चाहिए। संस्थानों को छात्रों को अंतर-सांस्कृतिक कार्यक्रमों, अंतर-राज्यीय खेलकूद, राष्ट्रीय भ्रमण आदि में भाग लेने के लिए संगठित और प्रोत्साहित करना चाहिए, पाठ्यक्रम को इस तरह से डिजाइन किया जाना चाहिए कि इसमें राष्ट्रीय इतिहास, संस्कृति, राष्ट्रीय नायकों आदि के बारे में अध्याय और सामग्री शामिल हो, ये पहल यदि शिक्षकों और शैक्षिक संस्थानों द्वारा लिया गया। राष्ट्रीय एकता के लिए अग्रणी छात्रों में एकता और राष्ट्रवाद की भावना विकसित कर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. के एंड नासिर। आर। (2000)। लेबनान में निजी-संचालित प्रोफेशनल स्कूलों में कहानी शिक्षण की स्थिति राष्ट्रीय एकता के लिए निहितार्थ, शैक्षिक अध्ययन के भूमध्यसागरीय जर्नल, टवस.5 (2), पृष्ठ 57-82
2. अज़ीज़.जेड., साललेह.ए., एमा रिबू.एच.ई. (2010)। राष्ट्रीय एकता का अध्ययन, बहुसांकृतिक मूल्यों का प्रभाव, शिक्षार्थ विविधता पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन। एल्सेवियर लिमिटेड द्वारा प्रकाशित, प्रोसिडिया सोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज (2010) पृष्ठ। 691-700
3. डेविस.टी.जे. और कालू-न्वीवू.ए. (2001)। नाइजीरिया के इतिहास में शिक्षा, जातीयता और राष्ट्रीय एकता, अफ्रीका की औपनिवेशिक विरासत की सतत समस्याएँ,नीग्रो इतिहास का जर्नल,टवस. 86,नंबर 1, पृष्ठ 1-11
4. लाल.आर.बी. और पालोड.एस (2014)। शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य। आर. लाल बुक डिपो पब. आईएसबीएन 978-93-85282-80-5, पृष्ठ 415-434।
5. महमूद ए.एफ. (1980) आधुनिक शिक्षा के परिचय और प्रसार के परिणाम, मिस्र में शिक्षा और राष्ट्रीय एकीकरण, मध्य पूर्व अध्ययन, 16:2, पृष्ठ 42-55, डीओआई:10.1080/00263208008700434
6. पेशकिन.ए.(1967) 34 शिक्षा और नाइजीरिया में राष्ट्रीय एकता, आधुनिक अक्रीकी अध्ययन के जर्नल, 5, 3 (967), स्नातकोत्तर। 323-334
7. सक्सेना.एन.आर.एस और चतुर्वेदी.एस.(2014).टीचर इन इमर्जिंग इंडियन सोसाइटी। आर. लाल बुक डिपो पब.आईएसबीएन 978-93-81466-45-2,पृष्ठ 453-458